

स्व-परिवर्तन के लिए रूहानी जादूगर का मार्ग प्रदर्शन

प्रमुख शब्दावली की परिभाषा

स्मृति: याद । मुरली से आपमें जागृती आती है और आप उस जागृती को अपने जीवन में सुरक्षित रखते हैं अर्थात् आप उसे याद रखते हैं ।

स्मर्थी: शक्ति, उर्जा, क्षमता, योग्यता

मनो-वृत्ति: मन का झुकाव, किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति हमारी वृत्ति

दृष्टि: नज़र । देखना, विशेषकर मन की आंखों का दृष्टि बोध

कृति: कर्म, संसार में हम किस प्रकार का व्यवहार करते हैं

सृष्टि: रचना । संसार की रचना

प्रमुख शब्दावली का आपस में सम्बन्ध

परिवर्तन तब होता है जब मुझे स्मृति, स्मर्थी, मनो-वृत्ति, दृष्टि और कृति का परस्पर सम्बन्ध समझ में आ जाता है । जिस बात को मैं सदा याद रखता हूँ (स्मृती) उससे मुझे अपनी वृत्ति (मनोवृत्ति) को बदलने की शक्ति (स्मर्थी) मिलती है परिणामस्वरूप यह निर्धारित होता है कि मैं संसार को किस प्रकार देखता हूँ (दृष्टि) और क्या कार्य करता हूँ (कृति) । जब मैं अविनाशी सत्यों को याद रखता हूँ तो मेरी वृत्ति श्रेष्ठ बन जाती है । इससे स्वाभाविक रूप से पवित्र और साफ दृष्टि हो जाती है और मैं प्रेम और शक्ति लगाकर संसार के कल्याण के लिए श्रेष्ठ कार्य करना आरम्भ कर देता हूँ । नीचे की कहानी इस प्रक्रिया को स्पष्ट करती है ।

रोजर बैनीस्टर की कहानी

सर रोजर बैनीस्टर एक अंग्रेज़ चिकित्सक और विद्वान थे, जो पहले व्यक्ति बने जिन्होंने एक मील की दौड़ चार मिनट से भी कम समय में पूरी की । 6 मई, 1954 की सुबह, जिस दिन रोजर बैनीस्टर ने रिकॉर्ड तोड़ा था, उस दिन पूरे दक्षिणी इंग्लैंड में लगातार बारिश हो रही थी और हवा बहुत तेज चल रही थी । दो वर्ष पहले हेलसिन्की में आयोजित ओलंपिक खेलों में सभी ने पूर्वानुमान लगाया था कि रोजर बैनीस्टर को ही गोल्ड मैडल मिलेगा । वे चौथे स्थान पर आए । मुख्य समाचारों में उनकी हार के बारे में खबर आई ।

हेलसिन्की की यादों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा । उन्हें मालूम था कि तेज़ हवा उनकी गति को धीमा कर देगी और प्रत्येक चक्कर में एक एक सैकंड वह पीछे होते जाएंगे और एक मील का अर्थ है चार चक्कर लगाना । उन्होंने कहा, “ मुझे लग रहा था कि इन हालातों में दौड़ना व्यर्थ होगा जब मेरा समय 3:56 आएगा, मुझे विश्वास नहीं था कि 3:56 तक भी मैं पहुँच पाऊंगा” ।

उस दिन सुबी पैडिंगटन हॉस्पिटल में जाकर नियमित चक्कर लगाने के बाद उन्होंने ऑक्सफॉर्ड के लिए ट्रेन पकड़ी । संयोगवश उसी ट्रेन में उनके कोच फ्रैंक सटैम्पल भी थे । सर रोजर याद करते हैं कि : “उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि आप 3:56 कर सकते हो और अगर आपमें कर सकने का दम है और आपने नहीं किया तो आप स्वयं को पूरी उम्र माफ नहीं कर सकेंगे'। और मुझे लगता है कि इस बात ने मेरे मन को हिला कर रख दिया” ।

द डेली टेलीग्राफ ने उस समय इसे “ खेलों का सबसे बड़ा लक्ष्य” कहकर खबर छापी , “एवरेस्ट की भांति दुश्प्राप्य और अप्राप्य” । इससे यह सवाल उठता है कि : मानव क्या कुछ पाने के सक्षम है ? हेल्सिन्की में अपनी हार के बाद बैनीस्टर ने चार मिन्ट का रिकॉर्ड तोड़ने की प्रतिज्ञा की थी । उन्होंने कहा, “ मैंने इसमें अपनी सारी शक्ति लगा दी” ।

वह जादुई संघटक क्या था जिसके कारण उन्होंने रिकॉर्ड तोड़ा ? उन्होंने कहा, “ मुझे पक्का विश्वास है कि अंत में सब मन पर निर्भर करता है” । अपनी स्मृति को बदलने से उनमें अपनी वृत्ति को बदलने की स्मृती आई, सर बैनिस्टर ने स्वयं को चार मिन्ट का रिकॉर्ड तोड़ते हुए देखा (दृष्टि) । उसने याद किया कि पहले भी उसने यह किया है और इससे उसकी वृत्ति: ‘मैं कर सकता हूँ’ की बन गई । विचारों की यह प्रक्रिया एक क्षण में हो सकती है जिससे विभिन्न स्तरों पर समय-अंतराल उपेक्षित हो जाता है, और हम इसे विभिन्न स्तरों का मिश्रण कह देते हैं और हमें मालूम नहीं पड़ता कि यह सब कैसे होता है ।

यह प्रक्रिया यहां समाप्त नहीं होती लेकिन स्वयं पर और दूसरों पर गहरा असर, छाप या संस्कार छोड़ती है । फिर यह संस्कार और आगे परिवर्तन के लिए प्रेरणा स्रोत बन जाता है । एक मील के लिए वर्तमान रिकार्ड 3:43 का है जो कि मोरक्को के हिचैम अल गुएरोज का है । वैसे तो चार मिन्ट से कम दौड़ एक अत्यंत मुश्किल कार्य है फिर भी आज तक 13,00 लोगों ने किया है ।

अगर किसी धावक को चार मिन्ट में एक मील दौड़ने का रिकॉर्ड तोड़ना चाहता है तो वह यह जानते हुए अभ्यास करता है कि पहले भी बहुत से धावकों ने ऐसा किया है । उसकी स्मृति का ध्यान उन धावकों पर केंद्रित है जिन्होंने पहले चार मिन्ट में एक मील का रिकॉर्ड तोड़ा है । यह स्मृति धावक में स्मृती लाती है जिससे उसकी मनोवृत्ति बदल जाती है । अब वह विश्वास करता है कि यह किया जा सकता है क्योंकि दुसरे लोगों ने ऐसा किया है । धावक की दृष्टि अब स्वयं को चार मिन्ट में एक मील का रिकॉर्ड तोड़ते हुए देखती है । यह सोच “मैं चार मिन्ट का रिकॉर्ड तोड़ सकता हूँ” अब धावक के लिए नया सामान्य बन जाता है । इसी प्रकार 13,00 लोगों ने अब तक ऐसा किया है (कृति) ।

ब्रह्मा बाबा के कदम पर कदम रखना

ब्रह्मा बाबा ने अपनी स्मृति बदल कर अपने कर्मों को परिवर्तन कर दिया । जब शिवबाबा ने उन्हें बताया कि वास्तव में वह एक दिव्य हस्ती है तो उन्हें सम्पूर्ण विश्वास हो गया । जो मुरली उन्हें शिवबाबा से प्राप्त हुई उससे उनमें जागृति का सृजन हुआ (कि वह एक दिव्य हस्ती है) और उन्होंने इस जागृति को अपने जीवन में सुरक्षित रखा अर्थात् वह इस बात को याद करते रहे । इस स्मृति ने उन्हें अपनी वृत्ति, दृष्टि और कर्मों को परिवर्तन करने की स्मृती दी ।

उन्होंने परमात्मा और आत्मा के सर्वोच्च सत्य की ओर अपने मन को मोड़ कर अपनी मनोवृत्ति को परिवर्तन कर दिया । उन्होंने अपने रूहानी व्यक्तित्व को निराले, सम्पूर्ण और पूर्णतया दिव्य रूप में गढ़ दिया । उन्होंने अपने पुराने संस्कारों का त्याग कर दिया और स्वयं को शिवबाबा के रंग में रंग दिया । उनकी स्मृति इतनी शक्तिशाली थी कि इससे उनमें वास्तविकता को देखने की क्षमता आई, विशेषकर मन की आंखों से, जिससे स्वयं के दिव्य स्वरूप के बारे में उनकी छवि दृढ़ हुई । इसलिए उन्होंने आध्यात्मिकता की दृष्टि से देखकर अपने कर्मों (कृति) को परिवर्तन कर दिया । यह सब इतना स्वाभाविक तौर पर हुआ कि अपनी सहूलियत अनुसार हमने इसे जादू का नाम दे दिया । परन्तु अगर

हम भी विश्लेषण करें तो जादू सीख सकते हैं और ब्रह्मा बाबा की तरह कर्मातीत और अव्यक्त बन सकते हैं ।

परिवर्तन याद से अर्थात् स्मृति से आरम्भ होता है, स्मृति ही ज्ञान का बीज है । इस बीज को मुरली पर ध्यान रूपी पानी देकर और प्रतिदिन अभ्यास की धूप में रखकर हममें जादूई परिवर्तन होता है । तो मुरली सफल आध्यात्मिक अभ्यास का मर्म है । मुरली, मौखिक कथन है जो आत्मा को फिर से उसकी असली दिव्यता की ओर लौटाने की परोपकार की मंशा से शिवबाबा सीधे आत्माओं के समक्ष उच्चारण करते हैं । मुरली एक आईने की भांति है जो आत्मा के निराली आध्यात्मिक अस्तित्व की सूक्ष्म रूपरेखा को प्रतिबिंबित करती है । जब आत्मा इन आध्यात्मिक शिक्षाओं को प्रेम और भावना से सुनती है तो उसमें अंतर्निहित सत्य उजागर होता है और आत्मा अपने असली दिव्य संस्कारों को याद करती है । यह पहचाने हुए सत्य हमें शक्ति देते हैं और संसार में हमारी वृत्ति, दृष्टि और कृति का निर्माण करते हैं ।

चलिए हम सभी सामूहिक रूप से मुरली को एक शक्तिशाली परिवर्तन साधन के रूप में प्रयोग करें । इसे नये दृष्टिकोण से देखें और महसूस करें कि यह हमारे जीवन का केन्द्रबिन्दू है । इसके लिए हमें नई स्मृति, नई वृत्ति और नई दृष्टि का फायदा उठाने की आवश्यकता है क्योंकि ये प्रतिदिन मुरली में प्रचूरतापूर्वक आते हैं ।